IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सनातन धर्म का पर्यावरण संरक्षण

नाम :– अजय कल्ला

महाविद्यालय :– ऐष्वर्या महाविद्यालय, पाली (राज)

उद्देष्य :– सनातन धर्म की परंपराओं से पर्यावरण संरक्षण के उपाय ढूंढना।

शोध विधि :– दार्षनिक विधि, तुलनात्मक विधि, ऐतिहासिक विधि।

भूमिकाः सनातन धर्म में प्राकृतिक परिवेष को धार्मिक आस्था के साथ जोड़ दिया गया ताकि व्यक्ति स्वयं ही जानबूझकर या अनजाने में ही सही, लेकिन पर्यावरण का संरक्षण करता रहे तथा उसके कार्यों से पर्यावरण संरक्षण होता रहे। ऐसी अनेक परंपराओं में से कुछ को यहाँ उद्धत किया गया हैं।

शोध पत्रः

वर्तमान की सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण प्रदूषण है। जिसे हल करना वर्तमान में अत्यधिक कठिन कार्य बन गया है, क्योंकि जहाँ वर्तमान में किसी भी देष के लिए शक्तिषाली बनना आवष्यक है तथा उसके लिए भौतिक व वैज्ञानिक तकनीकी का विकास का प्रयोग आवष्यक हो गया है वहीं दूसरी ओर भौतिक उन्नति के साथ–साथ पूरे विष्व का पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है। पारिस्थिति तंत्र को नुकसान पहुँच रहा है। विज्ञान वरदान और अभिषाप दोनों ही होता है। वैज्ञानिक उन्नति ने जहाँ जीवन को सुखमय बनाया है, वहीं हमारे सामने अनेक समस्याओं को उत्पन्न कर दिया है, जैसे तापमान वृद्धि, वृक्ष व जीवों की प्रजातियों का समाप्त होना, मरुस्थीकरण, वनों की कटाई, घटता जल स्तर आदि। इन समस्याओं से मुक्ति के लिए अनेक प्रकार के सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं तथा उनके प्रयास भी सराहनीय हैं। हम पृथ्वी व पर्यावरण को पहले जैसा बनाने की कोषिष में लगे हैं। अतः मुझे लगा कि पहले जब वैज्ञानिक उन्नति नहीं थी, तब किस तरह से पर्यावरण संरक्षण के प्रयास किए गए थे और तब मेरा ध्यान भारतीय संस्कृति की कई बातों पर गया कि कैसे प्राचीन काल में पर्यावरण संरक्षण के उपाय किए गए थे। यहाँ यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि धार्मिक कृत्यों का आध्यात्मिक लाभ निष्चित ही होता होगा। मैं सिर्फ उनके पर्यावरणीय लाभों के अनुसार ही लिख रहा हूँ।

भारतीय संस्कृति चार पुरुषार्थ की बात करती है, धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष। इसमें प्रथम पुरुषार्थ धर्म है। धर्म शब्द धृ धातु से बना है, जिसका अर्थ है, धारण करना अर्थात् धर्म वह है जो सभी व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और पूरा विष्व धारण कर सकता है। भारतीय संस्कृति ने जीवन के सभी क्षेत्रों को धर्म से जोड़ा तथा हमारी सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, राजनीतिक, चिकित्सा संबंधित सभी समस्याओं से मुक्त रखने का ठोस कार्य किया। कुछ उदाहरण मैं प्रस्तुत करता हूँ – जैसे तापमान वृद्धि वर्तमान की एक बड़ी समस्या है। एक अनुमान के अनुसार 2050 तक पृथ्वी का तापमान 60 डिग्री तक पहुँच सकता है, जिससे कि अनेक प्रकार के रोग हो सकते हैं तथा ग्लेषियर के पिघलने से भारी तबाही आ सकती है। तापमान वृद्धि रोकने के लिए वृक्षारोपण की बात की जाती है। वृक्षारोपण के लिए सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर काफी प्रयास किए जाते हैं। भारतीय संस्कृति में इसके लिए काफी पहले प्रयास शुरू कर दिए थे तथा उन्होंने गर्मी से मुक्ति की एक बड़ी विषेष खोज

बहुत पहले की थी। भारत में पाँच वल्कल वट पीपल पाकर पारस और गूलर वृक्ष को लगाने को एक धार्मिक कृत्य बातया है। इनको लगाने से पुण्य मिलता है तथा इन्हें काटने पर भारी पाप लगने की बात कही गई है। वास्तव में वट वृक्ष में एक तरल पदार्थ सदा विद्यमान रहता है। इन वृक्षों के आसपास का जितना तापमान बढ़ता है, उतना ही यह तरल पदार्थ अधिक–अधिक पिघलता है तथा पत्तियों के माध्यम से बाहर निकल कर गर्मी के अनुपात में ही ठंडक प्रदान करता है। अतः जितनी गर्मी बढ़ती है उतनी ही पुनः ठंडक उत्पन्न हो जाती है। जिससे वातावरण ठंडा रह सकता है। इन वृक्षों की आयु भी सैकड़ों वर्ष होती हैं। भारतीय जनमानस में इन पेड़ों के प्रति धार्मिक आस्था का संचार करके वातावरण को ठंडा रखने का बड़ा जबरदस्त कार्य किया गया है।

इसी तरह यज्ञ करना भी भारतीय संस्कृति में आवष्यक कार्य बताया गया है। कुछ यज्ञ दैनिक है तो कुछ कार्यों के अनुसार। यज्ञ में अग्नि में आहुति दी जाती है। वर्तमान में अन्वेषकों ने सिद्ध किया है कि हवन में जो पदार्थ आहुति के रूप

में डाले जाते हैं, वे गैस बनकर पृथ्वी के समस्त जीवमंडल के लिए लाभदायक होते हैं तथा उनसे पर्यावरण व स्वास्थ्य को अत्यधिक लाभ मिलता हैं।

तालाब, बावड़ियाँ, कुआँ आदि के निर्माण को भी धर्म के साथ जोड़ा गया है, जिससे वर्षा का पानी एकत्रित भी रहे तथा साथ ही भूजल का स्तर भी बराबर बना रहता है।

सभी देवी–देवताओं के वाहन के रूप में पषु व पक्षियों को बताया गया है, ताकि जनमानस में पषु–पक्षियों के प्रति भी सम्मान पैदा हो। कृषि के लिए अत्यधिक लाभदायक गाय को एक विषेष स्थान दिया गया, उसमें 33 करोड़ देवी–देवताओं का निवास बताया गया तथा इन सब बातों से गाय व अन्य सभी पषु–पक्षियों के संरक्षण का प्रयास किया गया।

यहाँ नदियों को देवी का स्वरूप माना गया, जैसे गंगा माँ, यमुना माँ, सरस्वती माता आदि। इस प्रकार के व्यवहार से जनमानस को नदियों में प्रदूषित वस्तुएँ ना फेंकने तथा नदियों को साफ–सुथरा रखने के लिए प्रेरित किया गया।

वर्तमान में वनों को सुरक्षित क्षेत्र बनाकर वहाँ पेड़ों की कटाई वह षिकार पर रोक लगाई जाती है। भारतीय संस्कृति में देवीय स्थलों का निर्माण करके यही कार्य किया जाता था।

महत्वः

कोई भी कार्य तब सफल होता है, जब प्रत्येक व्यक्ति की उसमें भागीदारी हो। धर्म हर व्यक्ति से जुड़ा है, अतः सनातन धर्म में जो परंपरा है, सभी नागरिक उसका अनुसरण करते हैं तथा इससे पर्यावरण संरक्षण में सभी नागरिकों की भागीदारी प्राप्त होती है तथा धार्मि आस्था होने के कारण गलत कार्यों पर रोक लग जाती हैं। इसमें अधिक धन भी नहीं लगता क्योंकि यह परंपराएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्वतः हस्तांतरित होती रहती हैं। अतः हमें उन परंपराओं की ओर पुनः चलना चाहिए।